UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

• वर्ष : ९१ • डिसेंबर २०२३ • पुरवणी विशेषांक ०६

॥ श्री विश्वनाथो विजयते ॥
स्थापना : ९ जानेवारी १९२७

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

1. कुँअर बेचैन के ग़ज़लों में धार्मिक बोध विश्वशांति के संदर्भ में

- डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे ---------- 9

2. हिंदी काव्य में विश्वशांति

- डॉ. दिलीपकुमार कसबे ---------- 13

3. विश्वशांति एवं विकास में पर्यावरण केंद्रित हिंदी उपन्यासों का योगदान

- प्रो. (डॉ.) सविता शिवलिंग मेनकुदळे ---------- 16

4. विश्व शांति के परिप्रेक्ष्य में दिनकर जी का 'कुरूक्षेत्र'

- प्रा. मारूफ मुजावर ---------- 20

5. 'फ्री टिबेट' काव्य संग्रह में विश्वशांति का संदेश

- प्रा.डॉ.प्रशांत रामचंद्र नलवडे ---------- 24

6. विश्व शांति और राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज

- डॉ.संजीवनी संदीप पाटील ---------- 26

7. कवि नीरज के काव्य में विश्व मानवता तथा विश्व शांति का संदेश

- डॉ. भोसले जी.एस. ---------- 30

8. 'राहुल' खंडकाव्य में विश्वशांति का संदेश

- डॉ गोरख निळोबा वनसोडे ---------- 33

9. 'विश्वशांति एवं विकास में हिंदी काव्य का योगदान'

- डॉ.नितीन हिंदुराव कुंभार ---------- 39

10. विश्वशांति एवं विकास में हिंदी भाषा का योगदान

- प्रा. वगनर ज्ञानेश्वर किसन ---------- 42

Scanned with OKEN Scanner

विश्व शांति के परिप्रेक्ष्य में दिनकर जी का 'कुरुक्षेत्र'

प्रा. मारूफ मुजावर
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
चंद्राबाई-शाताप्पा शेडुरे कालेज, हुपरी
मोबा. 9822780357
ईमेल-marufmujawar@gmail.com

आज विश्व की शांति व्यवस्था अत्याधिक ज्वलंत समस्या है । किसी भी सभ्य समाज में खास तौर से एक ऐसे धर्म निरपेक्ष और लोकतांत्रिक राज्य में जिसमें विभिन्न धर्मो को माननेवाले और किसी धर्म को न मानने वाले मानवतावादी लोग भी रहते है। नागरिकों के शांतिमय सह-अस्तिव के लिए धार्मिक सहिष्णूता एक अनिवार्य शर्त है। धार्मिक सहिष्णूता के कारण 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना स्वार्थ की भावना से दबती जा रही है। विश्व में व्याप्त गैर धार्मिक विचारधारा अनैतिकता, हिंसा इत्यादि अशांति के मूल कारण है। अतः यदि हम इन बुराइयों को खत्म कर दे तो विश्व में शांति स्थापित हो सकती है ।

हिंदी साहित्य के इतिहास को कुरेद कर देखा जाय तो अनेक साहित्यकार प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अपनी अनूठी साहित्यकृति के द्वारा वैश्विक शांति की बात करते है। इसी कडी में रामधारीसिंह 'दिनकर' जी की साहित्य सोच अधिक बलवती लगती है। दिनकर द्वारा रचित 'कुरूक्षेत्र' काव्य अपने आप में वैश्वीक शांति की ही पुरजोर कोशिश करता है।

कुरूक्षेत्र की कथा का आधार महाभारत से लिया गया है। कुरूक्षेत्र का युध्द समाप्त हो चुका है। पाण्डवो की विजय हो चुकी है। किन्तु उनकी इस विजय का क्या प्रभाव पडा इस प्रष्न पर विचार करने का किसी को भी अवकाश नहीं है। पाण्डव-पक्ष के सब लोग विजय के आनन्द के नशे में चूर है । उन्हें न तो स्मशान से भी भीषण दृश्यवाली युध्दभूमि का स्मरण है न पुत्रहीन माताओं का विलाप ही उनके कानों तक पहुंच रहा है, और न विधवाओं की दर्द-भरीं पुकार ही उन तक पहुंचती है । किन्तु एक व्यक्ति ऐसा भी है जो यह सब देख रहा है सुन रहा है और सोच रहा है। देख, सुन तथा सोचकर उसका हृदय करूणाचल हो उठा। और वह पुकार उठता है। ''हे भगवान ! मैंने यह क्या किया है?''

यह व्यक्ति युधिस्ठीर है। जो यह सोच रहे है कि उनकी विजय के पीछे छिपा हुआ ध्वस कितना दर्दनाक है। यदि वे युध्द न आरम्भ करते तो यह नाश क्यो होता? भारत की धीरता की वीरता पराक्रम का अन्त क्यो होता? क्यों माताएं पुत्रहीन होतीं और पत्नियां विधवा होती? किन्तु उन्हें अपने इन प्रश्नो का कोई उत्तर नहीं मिलता। ये प्रश्न उनके दिल पर निरन्तर आघात करते हैं और जब वे किसी प्रकार अपने आप को इस भीषण आघात से बचा नहीं पाते, तब अर्जुन कहकर भी भीष्म पितामह के पास आते है।

तीसरे सर्ग में हमारे सामने शांति की समस्या आती है। इस सम्बन्ध में पितामह कहते है कि यह ठीक है कि सभी शांति चाहते है, कोई भी युध्द नहीं चाहता, मरना तथा मारना नहीं चाहता, शांति को भंग नहीं करना चाहता। किन्तु शांति के दो रूप है - (1) कृत्रिम शांति और, (2) सच्ची शांति । कृत्रिम शांति वह है जो अन्याय और षोशण के आधार पर खडी है, और सच्ची शांति का आधार -प्रेम तथा अहिंसा है।

शासक शक्ति का सहारा लेकर जनता का शोषण करते है, उसके अधिकरों को छीन लेते है, स्वयं आनन्द से रहते हैं और यह कहते हैं कि शांति भंग मत करो। यह मिथ्या शांति कब चल सकती है। कब तक जनता अपने अधिकरों से वंचित होकर पिसती रह सकही है। शासकों का अहंकार जैसे-जेसे जनता को कुचलता जाता है, वैसे ही वैसे जनता के मन में शासकों के लिए घृणा तीव्र होती जाती हैं। पहले तो दबे अहंकार और घृणा का यह संघर्ष चलता है और फिर क्रान्ति उपस्थित होती है, युध्द आरम्भ होते है। धर्मराज, तुम्ही बताओ की इस क्रान्ति का उत्तरदायी कौन है - शासक या जनता, शोषक या शोषीत ? स्पष्ट: अन्यायी शासक ही इसके लिए उत्तरदायी है। जब तक समाज में विषमता है, तब तक संसार में सच्ची शांति सम्भव नहीं है। शांति के लिए समता आवश्यक है।

कथासार : युध्द की ज्वाला में भस्म हो चुका संपूर्ण कौरवकुल एवं अपार जनसमूह युधिश्ठिर को अशांत कर देता है। वे निराश -हताश होकर पितामह भीष्म के पास जाते हैं। भीष्म युधिश्ठिर को युध्द और धर्म नीति बतलाते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

ISSN No 2394-5990

भीष्म पितामह ने धर्मराज से कहा - 'ठीक है, युध्द अच्छा नहीं हैं। अनीति पर आधारित शांति क्या जरूरी है। जिनके हाथों में सत्ता आ जाती हैं, यह तो शांति की दुहाई देंगे ही । जहा अनीति का राज्य हो और साधु तथा सत्य प्रेमियों को मार दिया जाय, ऐसी शांति किस काम की?

अशान्ति और अनीति से जिनका मन दब रहा हो, उनके चेहरे पर क्रांति के चिन्ह स्पष्ट दिखाई देते है, लेकिन अन्धे सत्ताधारी फिर भी होश में नहीं आते। यदि ऐसी अवस्था में मनुष्य अन्यायी के नाश के लिए तत्पर हो जाए तो कौन युध्द का दोषी होगा? क्या महाभारत का युध्द अचानक ही जल उठा था ? क्या उस युध्द से पूर्व ही जनता के हृदय मे संघर्ष नहीं चल रहा था? शांति वहा कैसे हो सकती है, जहा विषमतायें लहराती है। न्याय के बिना शांति कैसे रह सकती है?

नकली शांति तो अपने आप डरा करती है। यदि न्यायोचित अधिकार मांगने से न मिले तो उन्हें लडकर भी प्राप्त करना चाहिए। अपने अधिकार के लिए लडना पाप नहीं हैं। यदि मनोबल ही ठिक था तो वन से वापस कयों आए थे। तुम्हारे मनोबल से सुयोधन कब हारा था? तुम जितने झुकते गए, शत्रू उतने ही और अधिक सिर चढते रहे। वहा सामर्थ्य किस काम की? क्षमा के आचरण में जो अपनी कायरता छिपाते है, वे भला आत्म-विश्वास का सुख क्या जान सकते है?

जिनकी भुजाए कभी फडकती नहीं, जिनका स्वाभिमान कभी जाग नहीं वे ही आत्म -बल के भरोसे रहते हैं। जो बैंरियों से बदला नहीं ले सकता, वह ही क्षमा का आसरा लेता है। प्रतिशोध का न लेना ही मनुष्य के लिए पाप है। वासना की तृप्ति के लिए युध्द करना पाप है। किन्तु चोट खाकर भी शान्त रह जाना तो और भी पाप है। अन्यायी युध्द का कारण होता है या अन्याय को कुचलने वाला? यदि अन्यायी न हों तो युध्द क्यो हो?

धर्मराज तुम भूलते हो। सारा संसार हिंसा और छल से भरा हुआ है। मैं भी सोचता हू कि किस उपाय से मनुष्य भाई-भाई बनकर जीवित रह सकता है? कैसे सारा संसार प्रेम के बन्धन में बंधा रह सकता है? किन्तु अभी सह सारा संसार आधी मंजिल भी पार नहीं कर पाया। अभी शांति का स्वप्न तो बहुत दुर है। युधिश्ठिर जैसा एकाघ होता है, किन्तु सुयोधन जैसे तो बहुत है। फिर शांति कैसे दृढ हो सकती है? प्रेम भय से नहीं, मन की उमंग से होता है।

कुरूक्षेत्र में अर्जुन ने अशांति नहीं फैलाई, वरन अशांति का नाश किया था। उसने अशांति पैदा करनेवालो, दूसरे के अधिकारो को छीननेवालों तथा असत्य का प्रचार करनेवालों का ही नाश किया है।

कवि यह सिध्द करता हैं कि - त्याग और क्षमा के साथ पराक्रम भी अनिवार्य है, अन्यथा त्याग और क्षमा मात्र दिखावा हैं।

'कुरूक्षेत्र' काव्य की मूल समस्या - युध्द की समस्या है। युध्द के तूफान मे सारे भीतर की शक्ति का नाश हो जाता है, और उस व्यापक नाश के दृष्य को देखकर युधिश्ठिर का हृदय करूणा, क्षोभ तथा निराशा से भर उठता है। यह निराशा युधिश्ठिर को संसार से विरक्त कर देना चाहती है। इस निराशा के कारण युधिश्ठिर का हृदय सुविधा में डूब जाता है, और अन्त में पितामह के प्रेरक साहसपूर्ण सन्देश तथा अपने चिन्तन से युधिश्ठिर के मन को ज्ञान की प्राप्ति होती है और वे मानवता के विकास की आशा का दीप जला लेते हैं।द्वितीय विश्व-युध्द के अंतिम क्षणों में ही दिनकर जी के सामने युध्द की समस्या नाच उठी होगी । और उस विश्व-युध्द के विनाशक प्रभावों ने उन्हें इस समस्या पर और भी तीव्रता से विचार करने की प्रेरणा दी होगी। इस विश्व-युध्द का सारे विश्व पर कितना घातक प्रभाव पडा है, यह सभी जानते है ।

'कुरूक्षेत्र' का कवि मानवतावादी कवि है, जो सार संसार को सुखी देखना चाहता है। सारे संसार के सुख में भारत का सुख भी शामिल हैं। अपने राष्ट्र की मंगल-कामना में सारे संसार की मंगल-कामना नहीं छिपी रहती हैं। किंन्तु संसार की मंगल-कामना में अपने राष्ट्र की मंगल कामना भी रहती हैं। हिन्दी के कवियों का राष्ट्र-प्रेम उसके विश्व -प्रेम और विश्व -मंगल की कामना में हैं। उसकी विशेषता का एक कारण है। भारतीय संस्कृति की अविच्छन्न धारा का सतत प्रवाह।

'कुरूक्षेत्र' में कुरूक्षेत्र -कालीन भारत की एक समस्या का वर्णन किया गया है। वह समस्या युध्द की समस्या है। उस युध्द के पश्चात् भारत ही नही, सारा संसार दीन और दुर्बल हो रहा था। उस समय भारत की ही नहीं, सारे संसार की दशा अत्यन्त करूण थी। सारे विश्व को और साथ ही भारत को भी ऐसे साहसीं वीरों की आवश्यकता थी जो दीन -दुखियों की सेवा कर सके, असहाय व्यक्तियों की सेवा कर सकें और लोगों के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझ सकें। पितामह ने जो संदेश युधिश्ठिर को दिया है, वह संदेश प्रत्येक भारतवासी के लिए है। साथ ही वह संदेश विश्व के प्रत्येक मानव को भी उद्बोधन देता है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपना व्यक्तिगत सुख-दुःख भूलकर मानवमात्र के कल्याण में लग जाना चाहिए। देश के दुःख को अपना दुःख और देश के सुख को अपना सुख सनझना चाहिए- वह सुख, जो मिलता असख्य

मनुजों को अपनाकर
हँसकर उनके साथ हर्ष मे
और दुःख में रोकर।
यह जो मिलता भुजा पंगु की
ओर बढा देने से
कन्धों पर दुर्बल दरिद्र का
बोझ उठा लेने से।

भारत धर्म की भूमि है और बडी विशाल है। यहा जनता धर्मप्राण है। धर्म उनके जीवन के प्रत्येक पक्ष में रिस गया। यद्यपि उस धर्म में कुछ रूढियों और ग्रन्थियों भी आती रहती हैं, किन्तु वे दुर भी होती रहती है।भारत की जनता विदेषी षासन के नीचे पिसती जा रही थी। उसकी इच्छाए घुटती जा रही थीं, उसकी आकांक्षाए मरती जा रहीं थीं, उसकी आवाज कुचली जा चुकी थी। उन्हें ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उनकी आकांक्षाओं को मुखर कर सकें, घुटते जीवन को अभिव्यक्ति दे सके। पितामह के इन शब्दों में भी संदेश व्यक्त हो रहा है–

सकृत – भूमी वन ही मही यह
देखो, बहुत बडी है।
पग पग पर सहायय हेतू
दीनता विपन्न पडी है।
इसे चाहिए सुदृढ वरण–भुज,
इसे चाहिए भाषा ।

'कुरूक्षेत्र' के रचना– काल में भारत के लिए दुसरी समस्या– पराधीनता की समस्या है। अँगरेज भारत पर शासन करते हुए उसे चुसते जा रहे थे। उन्होंने भारत का वैभव लूट लिया था। उन्होंने भारतीय संस्कृति को कलंकित करने की चेष्ठा की थी। उन्होंने सार भारत के धन को लुट लिया था। जनता का शोषण करने में उन्होंने कोई कसर न उठा रखी थी ।

इतना ही नहीं, वे अपने आप को शांति और न्याय का एक रक्षक कहते थे, और साथ ही साथ कहा करते थे कि, उनका विरोध कर उस शांति को भंग करने का किसी को अधिकार नहीं है और जो कोई उस शांति को भंग करता था, आजादी की आवाज उठाता था, उसे जंजीरी में जकड कर जेल में ठूस दिया जाता था।

कवि ने ऐसी शांति को 'कृत्रिम शांति' कहा है और उस कृत्रिम शांति का बडा ही मनोवैज्ञानिक तथा सजीव वर्णन किया है। इस नकली शांति के रक्षक तलवार के बल पर उसकी रक्षा करते थे।

और जिन्हें इस शांति –व्यवस्था
में सुख भोंग सुलभ हैं.
उनके लिए शांति ही जीवन–
सारे, सिद्वि दुर्लभ है।

और इस नकली शांति में दीन–दुखियों का और भी शोषण होता है।

साथ ही एक दुसरी समस्या भी संबधित है। वह समस्या है– स्वातंत्र्य प्राप्ति की। स्वतत्रता कैसे प्राप्त की जाए, इस पर कवि के विचार जानने से पूर्व द्वितीय विश्व युध्द के बाद उस युग की भारत की अवस्था को देखना उचित होगा।

महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के प्रयोग से स्वाधीनता प्राप्त करने का प्रण किया था। वे चाहते थे कि बिना युध्द किये संघर्ष किये– शान्तिपूर्ण आन्दोलन तथा असहयोग से ही देश की स्वतत्रता को प्राप्त किया जाय। द्वितीय विश्व –युध्द के आरंभ तक उनका खूब यह प्रयोग चल चुका था। किन्तु महात्मा गांधी की इस नीति का क्या परिणाम निकला? हर बार ब्रिटिश सरकार ने उन्हें धोखा दिया। झुठे आश्वासन देकर अपना उल्लू सीधा किया और शासन की जंजीरे और भी मजबूत कर ली।

हिंसा का आघात तपस्या ने
कब, कहा सहा है?
देवों का दल सदा दानवों
से हारता रहा हैं।

भारतीय जनता ने अंग्रजों के अत्याचारों को जितना ही सहन किया, वे और भी क्रूर होते गये। इस बात को भी पितामह कहते हैं–

अत्याचार सहन करने का
कुफल यही होता है।
पौरूष का आतंक मनुज
कोमल होकर खोता है

जिस प्रकार युधिश्ठिर की क्षमा और त्याग से दुर्योधन की कुटिलता बढती गई थी उसी प्रकार गाधी की अहिंसा की नीति ने अंग्रेज शासकों की कुटिलता को और भी बढाया था। कवि ने स्पष्ट रूप से पितामह से कहलवाया है कि यदि अधिकार मागने से न मिले तो उन्हें लडकर प्राप्त करना– मानव का कर्तव्य हो जाता है। और जो लड नहीं सकता, जो अपने अधिकारों को प्राप्त नहीं कर सकता, वह निरन्तर पिसता रहता है, न्याय का पक्ष लेकर युध्द करना कभी पाप नहीं हो सकता –

न्यायोचित अधिकार मांगने
से न मिले, तो लड के
तेजस्वी छीनते, समर को–
जीत, या कि खुद मर के।

Scanned with OKEN Scanner

ISSN No. 2394-5990

शक्ति के अभाव में क्षमा का सहारा लेना मन की कायरता हैं। अगर कोई व्यक्ति या जाति अपने ऊपर किये गये अत्याचारों का बदला नहीं लेती और सहनशील बनी रहती हैं तो उसे बेबस होकर अपमान सहना ही पडेगा।

अतः हम यह कह सकते है कि कवि दिनकर द्वारा रचित 'कुरूक्षेत्र' मानव को मानवता की रक्षा की गुहार करता है। यह काव्य मात्र भारत की स्वाधीनता प्राप्ती की ही बात नहीं करता बल्कि विश्व में फैले आतंक से मानव मुक्ति की बात करता है। इसलिए हिंदी साहित्य के अनुपम कृतियों में दिनकर जी रचित 'कुरूक्षेत्र' का नाम लिया जाता हैं।

संदर्भ :

1) भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास – डॉ.ए.के.मित्तल
2) 'कुरूक्षेत्र' – रामधारिसिंह 'दिनकर'
3) हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. माधव सोनटक्के
4) हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. रमेश चन्द्र शर्मा

Scanned with OKEN Scanner